कि अगर मुम्बई ब्लास्ट्स नहीं होते,तो आने वाली जो बातचीत हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच में थी,वह इसी नॉन-पेपर के बेस पर होती । मैं यह समझता हूं कि यह बहुत गंभीर बात है । सरकार को इस मामले में अपनी स्थिति साफ करनी चाहिए । उनका कश्मीर के बारे में क्या इरादा है ? क्या वे pre-1953 की position को बहाल करना चाहते हैं ? क्या de-milltarise करना चाहते है? यानी स्थिति क्या है? कश्मीर के बारे में आज हम कहां खड़े हैं,यह बताया जाए । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: कश्मीर के ऊपर डिसकशन नहीं हो रहा है ।...(**व्यवधान**)...

श्री संतोष बागड़ोदिया(राजस्थान)**:** पार्लियामेंट में खड़े है ।

डा.मुरली मनोहर जोशी: पार्लियामेंट में नहीं खड़े है । पार्लियामेंट ने तो जो प्रस्ताव पास किया था,उसके मुताबिक एक-एक इंच ज़मीन वापस लेनी थी । वहां आप खड़े होते है,तो मुझे बहुत खुशी होती । ...(**व्यवधान**)...

श्री संतोष बागड़ोदिया: आप खड़े है सर ।

डा.मुरली मनोहर जोशी: मैं तो खड़ा हूं,मैं तो उसी जगह खड़ा हूं । सवाल आपका है,इसलिए मेरा यह अनुरोध है कि इस पर सरकार अपनी स्थिति साफ करे । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: ठीक है,आपने कहा है , if the government wants to respond, it will. Next is Prof. Alka Balram.

Evaluation of examination papers of the Chowdhary Charan Singh University of Meerut by middle passed children

प्रो.अलका क्षत्रिय (गुजरात)**:** उपसभापति महोदय,उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में चौधरी चरण सिंह युनिवर्सिटी के B.A.,B.Sc.,M.Sc, BBA और MBA के युनिवर्सिटी परीक्षा के जो पेपर्स हैं,पांचवीं और आठवीं पास बच्चे वे पेपर्स चैक कर रहे हैं-ऐसा पिछले वीक हमने इंडिया टी.वी.पर देखा । इसके लिए पुलिस ने एक गिरोह को पकड़ा है । उस गिरोह से जब पूछा गया कि ये पेपर्स आपको कौन देता है,आपके पास कहां से आए? तो उन्होंने जिसका नाम लिया,वह मेरठ युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार का बेटा है,जिसको ये पेपर्स चैक करने का Contract दिया गया है । वह वे पेपर्स दो रूपए और पांच रूपए में चैक करवाता है और सिर्फ पांचवी और आठवीं पास बच्चे उन पेपर्स को चैक कर रहे है,जिनको B.A,B.Sc, M.Sc. की full form तक मालूम नहीं है । जो बच्चे पूरे साल मेहनत करके,इम्तिहान देकर अच्छा रिज़ल्ट लाना चाहते है,उनके पेपर्स ऐसे लोगों से चैक करवा दिए जाते है । उनको पढ़ाने के लिए उनके parentsकितनी मज़दूरी करके,अपना पेट काटकर उनको पढ़ाते हैं,खर्चा करते हैं । महोदय,इससे भी आगे,जब युनिवर्सिटी रजिस्ट्रार के वहां छापा मारा गया,तो उनके घर से करीब पचास हज़ार कॉपिंया बरामद हुई है । अब ये कॉपियां एक-दो कॉपियां तो है नहीं । यह कहां से आई,किसने लोड करके आई,इसकी भी जांच होनी चाहिए और इसके पीछे कौन-कौन लोग जिम्मेदार है,उसकी जांच भी होनी चाहिए । हालांकि यह राज्य से जुडा मामला है,लेकिन पूरे देश के विद्यार्थियों के साथ क्या ऐसा होगा? यह तो भावी नागरिकों का भी मामला है,इसलिए

मैं सरकार से दरख्वास्त करती हूं कि सरकार इस मामले की जांच करवाने के लिए आदेश दे और वहां के राज्यपाल से भी कहे कि वे इसकी पूरी रिपोर्ट मंगाएं और इसके लिए जो भी जिम्मेदार हैं,उनके against कार्यवाही की जाए,धन्यवाद।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी(राजस्थान)ः सर,मैं इससे अपने आपको सम्बद्व करता हूं ।

श्री कलराज मिश्र(उत्तर प्रदेश)ः सर,मैं भी इससे स्वंय को सम्बद्व करता हूं ।

श्री मती सुषमा स्वराज(मध्य प्रदेश)ः उपसभापति जी,चौधरी चरण सिंह,विश्वविद्यालय ,मेरठ में पर्चो की जांच बच्चों से कराए जाने का यह जो मामला प्रकाश में आया है,यह मामला केवल दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है,बल्कि शर्मनाक भी है ।

महोदय,परीक्षा से पहले पर्च लीक होने का मामला तो बहुत बार प्रकाश में आता रहता है,कई युनिवर्सिटीज का भी और कई संस्थाओं का भी,लेकिन पहली बार एक ऐसा मामला सामने आया है,जहां परीक्षा के बाद उत्तर-पुस्तिकाओं की जांच पांचवीं और छठी क्लास के बच्चों के द्वारा करवाई जा रही है । सबसे पहला जो पर्चा सामने आया,वह फिज़ियोथेरपी का था और जो बच्चे जांच कर रहे थे,उनका बाकायदा इंटरव्यू लिया गया । उनसे पूछा- तुम कौन सी क्लास तक पढ़े हो ? उन्होंने कहा-पांच तक । पूछा-फिज़ियोथेरपी का शब्द सुना है? उसका अर्थ जानते हों ? उन्होंने कहा-नहीं । तो क्या हर रहे हो ? बोल-पुस्तिकाओं की जांच कर रहे है । जब तुम फिजियोथेरपी का अर्थ नही जानते हो,तो जांच कैसे कर रहे हो,नम्बर कैसे लगा रहे हो ? वे बोले कि हम लिखाई देख लेते है,जिसकी लिखाई सुन्दर होती है,हम उसको ज्यादा नम्बर देते है । और हम उत्तर की लम्बाई भी देख लेते है जिसका उत्तर ज्यादा लम्बा होता है उस्को ज्यादा नम्बर देते है। उपसभापति जी,किसी छात्र के भाग्य के साथ ऐसा खिलवाड़ हो सकता है,वह इसकी कभी कल्पना भी नहीं कर सकता । फिजियोथेरपी पढ़ने वाला बच्चा कितनी पढाई करता होगा,मेहनत करना होगा और कड़े परिश्रम के बाद पर्चा देता होगा और उस पर्चे की जांच पांचवी-छठी के बच्चे से करवाई जाएगी और उससे उसके पास और फेल का फैसला होगा,इसकी कल्पना न वह कर सकता है और न हम कर सकते है । अभी अल्का जी ने यहां पर बोलते हुए कहा कि यह राज्य का मामला है। उपसभापति जी,यह राज्य का मामला नहीं है । एक संस्था यूजीसी है,युनिसर्विटी ग्रांट्स कमीशन,यह एक्ट के द्वारा बनी है,विश्विद्यालय अनुदान आयोग विधेयक । उस विश्वविद्यालय अनुदान आयोग विधेयक की धारा-12,उस आयोग पर यह जिम्मेदारी डालती है ।धारा-12 में उसके कर्त्तव्यों की व्याख्या है,बाकी कर्त्तव्यों के अलावा यह कर्त्तव्य भी आयोग को सौंपा गया है कि वह परीक्षा और शिक्षा के स्तर में सुधार करेगा । परीक्षा के स्तर में सुधार करना,उसकी लगातार निगरानी करना, यह यूजीसी का काम है । हिन्दुस्तान की हर युनिवर्सिटी,हर विश्वविद्यालय युनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन से अनुदान लेता है और वे उसके मातहत है । इसलिए इसे राज्य का मामला कहकर खारिज कर देना सही नहीं होगा । महोदय,मैं शून्यकाल में उठाए गए इस मामले के माध्यम से सरकार से कहना चाहती हूं कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इस मामले का तुरंत गंभीरता से नोटिस ले,दोषियों के खिलाफ कार्यवाही करे,अगर इस युनिवर्सिटी के खिलाफ कार्यवाही करनी बनती है तो वह कार्यवाही भी करे,अगर इस युनिवर्सिटी के खिलाफ कार्यवाही करनी बनती है तो वह कार्यवाही भी करे,लेकिन आज छात्रों के साथ जो खिलवाड़ किया जा रहा है,वह बंद होना चाहिए । एक तरफ हम कहते है कि साइंस की पढ़ाई पढ़ो और सांइस की पढ़ाई में फिजियोथेरेपी आती है,उनकी परीक्षा की जांच पांचवीं और छठी कक्षा के बच्चों से करवाओ तो इससे ज्यादा शर्मसार करने-

वाली और कोई घटना नहीं हो सकती । यह मामला तो सामने आ गया,जो सामने नहीं आए है,उनके बारे में कल्पना करिए । यह कोई एक दिन की बात नहीं है । एक दिन के बाद कुछ कापियां,करीब दस हजार कापियां मेड के घर से निकली । उसके बाद कुछ कापिंया मैदान में पड़ी हुई मिली । यह मामला कहां जा रहा है ? यह बहुत ही गंभीर मामला है । इसकी जांच होनी चाहिए और दोषियों के खिलाफ कार्यवाही भी होनी चाहिए,यह मैं आपके माध्यम से यह मांग करती हूं ।

श्री प्यारे लाल खंडेलवाल(मध्य प्रदेश)**:** उपसभापति महोदय,श्रीमती सुषमा जी द्वारा उठाए विषय से मैं अपने को सम्बद्व करता हूं ।

श्री ललित किशोर चतुर्वेदी: उपसभापति महोदय,श्रीमती सुषमा जी द्वारा उठाए विषय से मैं अपने को सम्बद्व करता हूं

श्री कलराज मिश्र: उपसभापति महोदय,श्रीमती सुषमा जी द्वारा उठाए विषय से मैं अपने को सम्बद्व करता हूं ।

SHRIMATI MAYA SINGH (Uttar Pradesh): Sir, we all associate ourselves with this issue.

श्री अजय मारू(झारखंड)**:** उपसभापति महोदय,श्रीमती सुषमा जी द्वारा उठाए विषय से मैं अपने को सम्बद्व करता हूं ।

श्री रूद्रनारायण पाणि(उड़ीसा)**:** उपसभापति महोदय,श्रीमती सुषमा जी द्वारा उठाए विषय से मैं अपने को सम्बद्व करता हूं ।

डा.मुरली मनोहर जोशी(उत्तर प्रदेश)**:** सर,मेरा इस बारे में एक सुझाव है और मैं श्रीमती सुषमा जी की बात का समर्थन करता हूं ।जो इन्होंने बात कही है कि यूजीसी को इसपर तत्काल कार्यवाही करनी चाहिए और वहां की जितनी भी परीक्षाएं है,उनको तत्काल निरस्त किया जाना चाहिए,कैन्सल किया जाना चाहिए । साथ ही यह जांच भी की जानी चाहिए कि उस यूनिवर्सिटी द्वारा दी गई डिग्री की क्या स्थिति होगी ? यह कोई सामान्य मामला नहीं है । इसके बाद उस विश्वविद्यालय की डिग्रीज पर अन्तर्राष्ट्रीय चिह्न लग जाता है । इसलिए इन्टर यूनिवर्सिटी बोर्ड और यूजीसी को परीक्षाओं को डिग्रीज के मामले में तत्काल कदम उठाना चाहिए । इसके साथ ही जो तमाम दोषियों के बारे में मांग की गई है,वह तो अपनी जगह पर बिल्कुल सही है ।

श्री रूद्रनारायण पाणि: महोदय,हमारा नाम नहीं आता है । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आपका नाम आ जाएगा ।

श्री रूद्रनारायण पाणि: हमको विषय उठाने के लिए मौका नहीं देते है । ...(**व्यवधान**)...महत्वपूर्ण विषय है । ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आपका नाम आ गया,आपका नाम आ गया । ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: इसलिए तो मैं कह रहा था कि जो रवि शंकर जी का विषय है और जो विषय अल्का जी ने उठाया है,इस आधार पर तत्काल * की जाए ।

श्री उपसभापति:* यह रिकार्ड से निकाल दिया जाए ।

श्री उदय प्रताप सिंह(उत्तर प्रदेश)ः उपसभापति महोदय,जो विषय सुषमा जी और अल्का जी ने उठाया है,यह देश के उन नागरिकों और बच्चों का भविष्य है,जो स्वंय देश के भविष्य है,इसलिए यह मामला बहुत गंभीर मामला है । मेरा यह निवेदन है और मैं सुषमा जी की बात से सौ प्रतिशत सहमत हूं कि किसी राज्य या सरकार या दलों से ऊपर उठकर,इस पर विचार करना चाहिए । यह मामला यूजीसी का है और यह ऑटोनोमस बॉडी है तथा मैं शिक्षा विभाग से आता हूं । उस बॉडी पर सरकारों का नियंत्रण नहीं होता है । अगर होता है,तो उसमें गवर्नर्स जरूर चांसलर होते है और उनकी नियुक्ति केन्द्र सरकार करती है । इसलिए अल्का जी,इसमें सुधार कर लीजिए ...(**व्यवधान**)...अलका जी,इन बातों को छोड़ दीजिए,मैं आपकी बात से सहमत हूं । मैं यह कहना चाहता हूं कि यह एक ऐसा मामला है,जिसकी जांच बड़े ढंग से करानी चाहिए,क्योंकि जैसा मैंने अभी कहा कि यह उन बच्चों के भविष्य का सवाल है,जो इस देश का भविष्य हैं,यदि उनका भविष्य खराब होगा,तो इस देश का भविष्य क्या होगा ? इसलिए मैं निवेदन करता हूं कि इसे गइराई से और गंभीरता से लिया जाए ।

श्री मंगनी लाल मंडल(बिहार)ः उपसभापति महोदय,मैं भी अपने को इस विषय से सम्बद्व करता हूं ।

श्री उपसभापति: यूनिवर्सिटीज़ के स्टैंडर्ड मैंटेन करने की जिम्मेदारी UGC की है और UGC को चाहिए कि वह इसे गंभीरता से ले और इसकी जांच कराए ।

Need to take effective measures to tackle the drought situation in Bihar

श्री मंगनी लाल मंडल(बिहार)ः माननीय उपसभापति महोदय,देश के कई भागों में वर्षा होने के कारण भयंकर बाढ़ आ गई है और पिछले कई दिनों से स्थिति बहुत नाज़ुक है,लेकिन इस वर्ष बिहार में स्थिति बिल्कुल विपरीत है और वहां सुखाड़ की स्थिति है,अकाल की स्थिति है । अब यह सुखाड़ और अकाल की स्थिति का मुकाबला दो तरह से किया जा सकता है । खरीफ की बुवाई के लिए किसान को,जो पहले से नहर है,उस नहर से सिचांई के लिए पानी दिया जाना चाहिए । सरकारी हिसाब से बताया गया है कि 37 लाख हैक्टेयर भूमि में से सिर्फ 22 लाख हैक्टेयर भूमि में खरीफ की फसल लगी थी,लेकिन सुखाड़ के चलते,वह भी सुख गई है और सूख रही है और जो भी पौध ,धान के लिए उगाई गई थी,वह सूख गई है । भूगर्भ जल के लिए बिहार का स्थान तीसरा है,पहले झारखंड था,तो दूसरा स्थान था । वहां का जल स्तर बहुत नीचे नहीं है,5फीट,7 फीट,10फीट,20 फीट ,30 फीट पर अभी कंही-कहीं बिहार में पानी मिलता है । तो भूगर्भ जल के लिए जो स्टेट ट्यबवैल है,उसे जो सिचांई की व्यवस्था होनी चाहिए,वह नहीं हो रही है और सारे प्रदेश में हाहाकार की स्थिति है । मवेशियों के लिए जो चारे की व्यवस्था है,उस पर भी संकट आ गया है । इसलिए आने वाले दिनों में अगर बिहार

* Expunged as ordered by the Chair.